

अघनाशन वि. (तत्.) दुष्कर्म या पाप का नाश करने वाला पाप नाशक।

अघभोजी वि. (तत्.) दुष्कर्म का फल भोगने वाला।

अघमर्षण पुं. (तत्.) 1. वैदिक मंत्र जिसका उच्चारण संध्यावंदन के समय किया जाता है 2. संध्यावंदन के समय वैदिक मंत्र से पवित्र जल को अपने अंगों पर और चारों ओर छिड़कना 3. पापों का क्षय (पापक्षय)।

अघरि वि. (तत्.) पापहारी, पाप का नाश करने वाला।

अघवाना स.क्रि. (तत्.) 1. भोजन से तृप्त करना, भरपेट खिलाना, छकाना 2. पूर्ण संतुष्ट करना।

अघहर वि. (तत्.) पापक्षयकारक, पाप का नाश करने वाला।

अघहरण पुं. (तत्.) दुःखनाशक, पाप का नाश।

अघाट पुं. (तत्.) 1. जो घाट ठीक (उपयुक्त) न हो, कुत्सित घाट 2. अगहाट, जिस भूमि को बेचने का अधिकार स्वामी को न हो।

अघात वि. (तत्.) घात-रहित, क्षति-रहित पुं. (तद्.) आघात, चोट, मार, प्रहार।

अघाती वि. (तत्.) घात या क्षति न करने वाला।

अघाना अ.क्रि. (तद्.) पूरी तरह तृप्त होना; किसी वस्तु के सेवन से जी भरना उदा.- पनीर खाते-खाते अब मैं अघा गया हूँ।

अघाव पुं. (तत्.) 1. पूर्ण तृप्त होने का भाव 2. भोजन से मन तृप्त होने की स्थिति।

अघी वि. (तत्.) पाप करने वाला, पापी।

अघोर वि. (तत्.) जो भीषण या भयंकर न हो, सौम्य। पुं. (तत्.) 1. एक पंथ या संप्रदाय विशेष दे. 'अघोर पंथी' 2. अघोर पंथ का साधक या अघोरी 2. शिव का एक नाम या एक रूप।

अघोरनाथ पुं. (तत्.) भूतनाथ, शिव।

अघोरपंथ पुं. (तत्.) अघोरियों का एक विशेष पंथ या संप्रदाय जो मांस, मदिरा आदि का सेवन करता है।

अघोरपंथी वि./पुं. (तत्.) अघोर पंथ का अनुयायी, अघोरी, औघड़।

अघोरा स्त्री. (तत्.) भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी तिथि।

अघोरी वि.पुं. (तत्.) 1. अघोरपंथी 2. वर्ज्य या घिनौनी वस्तुओं का उपभोग करनेवाला व्यक्ति, घिनौना।

अघोष वि. (तत्.) घोष/शब्द रहित, ध्वनिरहित पुं. (तत्.) उच्चारण के अनुसार वे स्वनिम (ध्वनियाँ) जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियों में कंपन न हो जैसे- हिंदी व्यंजनवर्गों के पहले-दूसरे व्यंजन विलो. घोष, सघोष।

अघोषित वि. (तत्.) जिसकी घोषणा नहीं की गई हो, अकथित।

अघोषी भवन पुं. (तत्.) घोष स्वरों का उच्चारण के स्तर पर और कालांतर में लेखन के स्तर पर भी घोषत्वहीन हो जाना जैसे- विपद् के स्थान पर विपत्।

अघोषीकरण पुं. (तत्.) दे. अघोषीभवन।

अघौघ पुं. (तत्.) दुष्कर्मों का समुदाय, पापों का समूह।

अघ्न्य वि. (तत्.) अवध्य जो मारने/वध करने के योग्य न हो जिनका वध निषिद्ध हो जैसे- ब्राह्मण, बैल, शिशु, नारी।

अघ्न्या वि. (तत्.) 1. जो चंचल न हो, चंचलता रहित, स्थिर ठहरा हुआ 2. धीर, गंभीर स्त्री. गाय।

अघ्नेय वि. (तत्.) जिसे सूँघा न जा सके, जो सूँघने योग्य न हो।

अचंचल वि. (तत्.) जिसमें चंचलता न हो, धीर व्यक्ति।

अचंड वि. (तत्.) 1. जो चंड न हो, उग्रतारहित 2. शांत, सुशील, सौम्य।

अचंद्र वि. (तत्.) जिसमें चंद्रमा का प्रकाश न हो, चंद्रमा रहित अमावस्या तिथि।

अचंभा पुं. (तद्.) आश्चर्य, विस्मय, अचरज।